सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

जनवरी-फरवरी, 2009

युद्ध का कवच

'... परन्तु दाऊद के हाथ में तलवार नहीं थी।' (१ शमूएल १७:५०)

यह एक विचित्र कथन है। और वो भी एक युद्ध भूमि में। कही पर, किसी भी युद्ध क्षेत्र में ऐसे विचित्र कथन अभ्युक्त ना हुआ। 'परन्तु दाऊद के हाथ में तलवार नहीं थी।' मगर शाऊल ने उसे एक युद्ध का कवच देने की कोशिश की। 'दाऊद के हाथ में तलवार नहीं थी।' मगर उसके पास क्या था? परमेश्वर का वचन, बहुत शक्तिशाली और अभेध्य अस्त्र, उसके मूँह में था।

पलिश्ती-सेना के गोलियत ने जिस तरह जीवित परमेश्वर को ललकारा, उसे सुन कर दाऊद बहुत क्रोद्ध से भर गया। हमें भी उसी तरह महसूस करना चाहिए। जब गैर मसीही जन जीवित परमेश्वर का निरादर करे, हमारे दिल भी इस तरह दुखी होने चाहिए। क्या दाऊद के पास तलवार नहीं थी? 'एक शेर और एक भालू ने उस पर हमला किया।' दाऊद ने उन दोनों को मार गिराया। यह पलिश्ती भी पशुता दिखा रहा था। दाऊद ने यह विश्वास कैसे पाया? उसकी शुरूआत कहाँ हुई? उस मोआबिन स्त्री रूत के साथ उसका आरंभ हुआ। रूत ने अपनी सास नाओमी के जीवन को बहुत ध्यान से देखा। और जब नाओमी ने रूत से उसे छोड़ कर जाने की बात की, तो उसने इनकार कर दिया। रूत ने कहा, 'मैं ऐसा नही कर सकती। जहाँ तू मरेगी, वहाँ मैं भी मरूंगी। तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।' जब वह अपनी सास की जिन्दगी

पृष्ठ २पर...युद्ध का कवच..

आत्मिक उन्नति केलिए देखना न भूलें

'परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह ७:०० बजे

हे यहोवा तू मेरा परमेश्वर है

हे यहोवा तू मेरा परमेश्वर है। मैं तुझे सराहूंगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा, क्यों कि, तू ने अद्भुत कार्य किया हैं, तू ने प्राचीन काल की योजनाएं सच्चाई से पूर्ण की हैं। (यशायाह २५:१)

जीवित परमेश्वर - हमारा परमेश्वर हो, तो यह कितनी अद्भुत बात है! यहाँ नबी कहता है कि परमेश्वर ने प्राचीन काल से बनाई योजनाएं सच्चाई से पूर्ण की हैं। परमेश्वर की कृपा हमें नही भूलनी चाहिए। परमेश्वर हमारी सारी कठिनाइयों को सुलझाता है। मगर कितनी आसानी से, उन मुश्किलों को हम भूल जाते है। परमेश्वर कुछ लोगों को छूकर चंगा करते है। मगर जल्द ही वे लोग उसके बारे सब कुछ भूल जाते है। नहीं, परमेश्वर के कार्यों को हमें भूलना नहीं चाहिए। हमारा विश्वास, हमारी इमारतों की ऊंचाई पर आधारित न हो। जब तुम खुश हो, तब तुम्हारा विश्वास दृढ़ रहता है। मगर जब तुम्हारे हाथ में एक बुरी खबर का तार पहुंचे, और सब कुछ तुम्हारे खिलाफ़ जा रहा हो, क्या तब भी, परमेश्वर पर तुम्हारा विश्वास अटल रहेगा?

परमेश्वर के वचन विश्वसनीय है। जब तुम एक जहाज में सफर कर रहें हो, क्या तुम को यकीन है कि तुम उस पार जरूर पहूँच पाओगे? जब तुम परमेश्वर के वचन को मानते हो, तो अन्तिम परिणाम के बारे में तुम सुनिश्चित रहोगे। स्विटजरलैण्ड और इटली के बीच खोदी गई अद्भुत सुरंग एक महान उपलब्धि है। पहाड़ों पर जाने के बजाय अब गाड़ियाँ सीधे नीचे सुरंग से पार कर सकती है। हाँ उस सुरंग को खोदते समय, दोनों राज्यों के लोगों को अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ा। जब दोनों तरफ के लोग मिलने ही वाले थे कि एक बहुत बुरी दुर्घटना हुई। एक आदमी खुदाई कर रहा था। अचानक पानी की तेज बौछार से खुदाई-यंत्र उस आदमी के आरपार छिद गया। वे एक महान उपलब्धि हासिल करने ही वाले थे, मगर देखने के लिए वह व्यक्ति जीवित न था।

मनुष्य की सारी उपलब्धियों का अंतिम परिणाम कटुता ही है। मगर जब परमेश्वर कुछ कहेंगे तो, वह विश्वसनीय, सत्य और अपरिवर्तनीय है। अगर तुम उसको मानो तो अनन्तकालीन प्रतिफल पाओगे। कई लोग बाइबल को अपने दिमाग तक ही सीमित रखते है। दिल में उतरने नही देते है। वह 'परमेश्वर के वचन को जानना' नही होता।

तेरा सम्पूर्ण वचन सत्य ही है, और तेरा हरेक धर्ममय नियम सनातन है। (भजन संहिता ११९:१६०) हाँ, जब तुम परमेश्वर के वचन को मानते हो, तब उसका फल सनातन होगा। तुम साहस से भरे रहोगे क्यों कि तुम परमेश्वर के वचन का पालन कर रहे हो। कुछ लोग अपनी भावनाओं पर ही निर्भर रहते है। कलीसियाँ में ऐसे ही एक-दो लोगों को भी हम देख सकते है। बहुत फुर्ती से उनको इधर-उधर भागते देख सकते है। मगर एक महीने के बाद ये लोग कहीं नज़र नही आते। वे जीवित है भी या नही तुम जान नही पाओगे।

दोस्तों से आई कुछ चिट्ठियाँ आद्यात्मिक विकास को हानी पहुँचा सकती है। ... फलाने ने ऐसा किया। एक माँ, सुनी-सुनाई निन्दक और उड़ती अफवाहों को अपनी चिट्ठी में लिखने का कष्ट क्यों करे? एक भाई या बहन, किसी दूसरे भाई को अनाध्यात्मिक और हानि पहुँचाने वाली बातें क्यों लिखे? ऐसा पत्र देखते ही, तुम्हारा सारा आनंद गायब हो जाता है। क्या एक छोटी सी बुरी खबर तुम्हारे विश्वास को नाश करें? एक छोटी सी विपत्ति घटने के कारण, क्या परमेश्वर का वचन शून्य हो जायेगा? नही, मेरे प्रिय जन, परमेश्वर के वचन के साथ, सारे विषयों की परिगणना करना सीखो।

गिनती की पुस्तक २३ वें अध्याय में, एक आदमी के बोल को देखते हैं। पवित्र वचन में उस व्यक्ति को एक दुष्ट नबी ठहराया गया। बालाक द्वारा बिलाम ले जाया गया कि वह इस्राएलियों को

पृष्ठ २ पर...हे यहोवा मेरे परमेश्वर...

पृष्ठ १ से..हे यहोवा मेरे परमेश्वर...

शाप दे। उसने कहा, 'मेरे लिए यहाँ पर सात वेदियाँ बनवा, और सात बछड़े चढ़ा।' क्योंकि बिलाम को नबूवत करनी थी, इसलिए वेदियाँ बनवाई गयीं। उसने क्या कहा? ' परमेश्वर मनुष्य नहीं ... कि पछताए। क्या वह कुछ कहे, और उसे न करे? या क्या वह कुछ बोले, और उसे पूरा न करे? देख, मुझे तो आशिष देने की आज्ञा मिली है। जब कि वह (परमेश्वर) आशिष दे चुका है, तो मैं उसे रद्द नहीं कर सकता' (गिनती २३:१९,२०) 'मैं उसे रद्द नहीं कर सकता।' इस्राएलियों को शाप देने, वह राजा के साथ आया था। और बड़ी गूढ़ बात कहने लगा। 'मैं क्या कर सकता हूँ? यहोवा इन लोगों को आशिष दे चुका है। मैं परमेश्वर के वचन को रद्द नही कर सकता। क्या परमेश्वर एक मनुष्य है कि मैं उसका वचन बदल सकूँ। नहीं, वह परमेश्वर है। और परमेश्वर ने कहा - मैं उसे रद्द नही कर सकता।'

प्रिय पाठक, हम परमेश्वर के वचन पर अपना विश्वास बनाये रखे। 'परमेश्वर ने कहा है, परमेश्वर ने ही मुझे यह वादा दिया। वह मुझे नही छोड़ेंगे। वह उसे पूरा भी करेंगे।' उनका वचन विश्वसनीय और ना बदलने वाला है। एक पल में तुम्हारा ऐश्वर्य, गरीबी में बदल सकती है। मगर परमेश्वर बदलने वाले नही। उनकी योजनाएँ विश्वसनीय है। उनकेवचन के अनुसार चलना सीखो। दोस्तों का कहना या रिश्तेदारों के लिखने केअनुसार ना करो। परमेश्वर जो कहे - वैसा करें।

- जोशुआ दानिय्येल।

पृष्ठ १ से...युद्ध का कवच.

को परख रही थी, अपने पति और दो बेटों की मृत्यु के बाद भी नाओमी का विश्वास से भरा पाई। नाओमी की धार्मिकता और विश्वास बहुत दृढ़ था। और उस को यह लगा कि वह विचित्र देश इस्राएल, अपने स्वदेश से बढ़कर अपना लगेगा। ऐसे विश्वास में एक भव्य सुन्दरता है। विश्वास में कुछ आकर्षणीय बात तो नही। मगर विश्वास से भरा हमारा जीवन दूसरों के लिए आकर्षक बन सकता है।

उसके पश्चात कहानी से हमें पता चलता है कि रूत एक माँ बन गयी और नाओमी दादी बन गयी। उस समय उसकी दशा आशा रहित दिखने लगी। मगर, जहाँ एक विकसित विश्वास हो, वहाँ निराशा में भी आशा ज़रूर रहेगी। आशा के बुझते अंगारे को भी विश्वास की हवा दे सकते है।

जब मैं रूत के जीवन का अध्ययन करता हूँ, मुझे कई सत्य सीखने को मिलते है। रूत ने ओबेद को जन्म दिया। ओबेद से यिशै और यिशै का पुत्र दाऊद था। जब तुम्हारे घर में विश्वास का प्रारंभ होता है, वह बढ़ता जाता है। पीढ़ी दर पीढ़ी वह एक उच्च स्थान पहुँच गया। और दाऊद ने विश्वास की एक महान ऊँचाई हासिल की।

हम अनुमान लगा सकते है कि यिशै का एक आदर्श घर रहा होगा। घर में सबसे छोटा लड़का होते हुए, मातृवत यह लड़का दाऊद ऐसे घरेलू वातावरण में पला-बढ़ा और शिक्षा पाई होगी। हमें यह पता नही कि हमारे बच्चे कैसे सीखेंगे। मैं कैसे आधी रात तक घंटों सभाओं में बैठकर सीखता था। वहाँ मेरे माता-पिता, मिशनरी और दूसरे मसीही जन उपस्थित रहते थे। हम बैठकर परमेश्वर का वचन सुनते थे। मगर मुझे नही मालूम मैं किस हद तक समझ पाता था। उसके साथ-साथ, परमेश्वर को मैं बहुत आदर और सम्मान देता था। इन सब बातों ने मिलकर मेरे विश्वास को उच्च स्तर तक बढ़ाने में सहायता की। निश्चित ही यह सब, किशोर लड़के - लड़कियों के व्यवहार में चाहने योग्य परिवर्तन ला सकते है। मगर दाऊद के मन में एक 'तलवार' का विकास हो रहा था। और जरूर वह एक शक्तिशाली तलवार है।

'कि वे जाति-जाति से पलटा चुकाएं, और राज्य-राज्य के लोगों को दण्ड दे; कि उनके राजाओं को जंजीरों से, और उनके प्रतिष्ठित पुरुषों को लोहे की बेड़ियां जकड़ रखें; कि उनको ठहराया हुआ दण्ड दें; यही उसके भक्तों के लिए सम्मान है। याह की स्तुति करो।' (भजन संहिता १४९:७-९)

रणभूमि के कई अस्त्र-शस्त्र है, जो मनुष्यों को दिखाई नही देते। हम अपने बच्चों को इस युद्ध-अस्त्रों के बारे मे सिखाते है और उनको देते है। माता-पिता द्वारा की गई विश्वास भरी प्रार्थना इन शस्त्रों की धार को तेज करता है। तद्वारा तुम अपने पड़ोसियों को बान्ध रहे हो। तुम्हारा वहाँ होना उनको काबू में रखता है। तुम्हारे चारों तरफ कई दुष्ट लोग है जो अति घृणित कार्य करते है। उनमें परमेश्वर का भय नही होता। परमेश्वर ऐसे जघन्य लोगों को हमारे घरों से दूर रखते है। कुछ समय जब वे लोग हमारे घरों के पवित्रता को भंग करने के लिए इकट्ठे होते है तो परमेश्वर उनका नाश करते है। मसीही घरों की पवित्रता ही उनका अनमोल खजाना है। किसी भी कीमत पर तुम्हें उसको संभाल कर रखना पड़ेगा।

मैं एक स्त्री को जानता हूँ जो अमीरों के साथ ताल मेल रखती थी। उसकी एक ही सुन्दर सी बेटी थी। मगर उसे उसका मसीहियों के साथ उठना-बैठना पसन्द नही था। और वह अपनी बेटी को गैर मसीहियों के बीच ले जाती थी। वह पढ़ी-लिखी तो थी और उसका विवाह एक अमीर व्यक्ति के साथ हुआ। मगर उसके पास कोई हथियार नहीं था। हाय, उसकी जिन्दगी बरबाद हो गयी। उसके परिवार के लोग भी अपना सर पानी के ऊपर नही रख पाये। मैं उसके दुख को समझ सकता हूँ।

हम एक दूसरों को सहारा देते रहें। हमें विश्वास के द्वारा अपने मसीही घरों में धार्मिकता को बढ़ाते रहना चाहिए। कुछ लोग बहुत दुष्ट होते है। ऐसे लोग कलीसियाओं में भी अपनी दुष्टता को लाते है। ऐसा करना विपत्ति का साथ देना है।

हमें इस फैलोशिप की पवित्रता को भी संभाल कर रखना है। हमें यह समझना है, 'अगर में तुम्हारे परिवार की रक्षा करता हूँ तो परमेश्वर मेरे परिवार की रक्षा करेंगे।'

दाऊद गोलियत को मारने के लिए आगे बढ़ा।

For More Details Please contact on any of the following Addresses.

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-66334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

आंग्ल युद्ध में धर्मी व्यक्ति जनरल मॉन्टगोमेरी ने युद्ध लड़ा। मैंने उनकी रणनीति का अध्ययन किया। उन्होंने कैसे जर्मनी में प्रवेश पाया। उनकी माँ एक परमेश्वर का भय माननेवाली स्त्री थी। उसका बेटा, रोज बाइबल एक पद जब तक याद न कर लेता, तब तक वह उसे एक कॅप चाय भी नही देती थी। युद्ध भूमि में उनके साथ हमेशा एक बाइबल रहता था। वे हर रोज बाइबल हाथ में लिए एक मील दौड़ा करते थे। बाद में अंग्रेजी सेना, हिटलर पर बहुत आसानी से विजय पायी। मॉन्टगोमेरी का विश्वास इंग्लैण्ड का सहारा बना।

तुम्हें अनुग्रह में बढ़ना है। याद रखें की हमारे मसीही घरों में हम जो पाते है वह अमूल्य है। पवित्रता को तुच्छ कभी नही समझना चाहिए। कही और, कभी भी तुम उसको प्राप्त नहीं कर पाओगे। जब मसीही घरों में विश्वास घटता है तो विश्वासी आदमी नहीं उठते। एक ऐसा आदमी ही मिशनरी कहलाता है जिसके पास तलवार हो और युद्ध का कवच हो।

हम सब अन्धकार की शक्तियों के विरुद्ध पहले से ही शस्त्र ले कर तैयार रहें। ऐसा ना हो कि हमारे चोरों तरफ घिरी उस बुराई के सामने हार माननी पड़े, हम शस्त्र-सज्जित तैयार रहें।

- एन दानिय्येल।

परमेश्वर के पास ले जाना

अपनी कठिनाइयों से मत भागो। उनको बड़ा मत समझो। बिस्तर पर लेटे-लेटे, उनके बारे में ही सोचते मत रहना। दिन भर उनके बारे में सोचते-सोचते, अपनी भूख को भी मत उड़ाना। अपने दुःखों की परछाई दूसरों पर मत छाने देना और उनको भी दुखी मत कर देना। मगर परमेश्वर के पास एक दृढ़ निश्चय, साहस और विश्वास के साथ प्रार्थना में ले जाना। तब उनका सामना करने और उनको मिटाने के लिए आगे बढ़ना। तब, तुम उनको जितना भयानक समझते आ रहे हो, उससे बहुत छोटा पाओगे।

एक वृद्ध किसान, कई सालों तक लगातार अपने एक खेत में एक बहुत बड़े पत्थर के चारों तरफ ही हल चलाता था। वास्तव में वह उस पत्थर को लेकर बहुत दुखी हो गया था। क्यों कि उसके कारण, एक खेती करने का औजार, दो हल टूट चुके थे। और उसके इर्द-गिर्द काफी ज़मीन बेकार हो रही थी। एक दिन उसने निश्चय किया कि किसी भी तरह उस पत्थर से पीछा छुडाना है। खोदने के लिए सब्बल को उस पत्थर के नीचे गाड़ा तो देखो! वह एक फुट गहरा ही था। उसे ढीला करके, जरासी मेहनत से उसे अपनी गाडी में ले जा सका। सोच कर वह मुस्कुराया कि किस तरह बीते सालों में यह बात उस पर कैसी हावी थी।

एक दिन हम भी अपने उन सारे संकटों और व्याकुल चिंताओं को पीछे मुड़कर देखेंगे। और पायेंगे कि उनमें से कई बेवजह है। कई कितनी अवास्तविक, फिर भी कितनी व्यथा से भरे रहे। अपने जीवन की पनः अवलोकन कर रही, उस वृद्ध महिला की तरह, हम भी कहेंगे - 'मेरे सामने कई सारे संकट थे, खास कर वे जो वास्तव में नही घटे।'

- ए बी सिम्पसन।

ऊँचा पद नही, यह अनुग्रह है

कुछ लोगों में यह नासमझ धारणा रहती है कि एक पादरी, मिश्नरी या बाइबल स्त्री बनकर ही परमेश्वर के लिए जिया जा सकता है। अगर यही बात हो तो, हाय! कितने लोग परम प्रधान परमेश्वर को महिमा पहुँचाने के अवसर से वंचित रह जायेंगे। प्रिय, यह पदाधिकार की नही, तत्परता की बात है; पद नही, अनुग्रह ही है जो हमें परमेश्वर को महिमा पहुँचाने का सामर्थ देता है। परमेश्वर एक ऐसे मोची की दुकान में भी निश्चित ही महिमा पायेंगे। एक ऐसी दुकान जहाँ परमेश्वर का भय माननेवाला वह मोची, सूआ चलाते-चलाते, अपने उद्धारक के प्रेम को गाता रहता है। राजस्व से अनुमत अंश पाते हुए, याजक पद अपनाये हुए पादरी, केवल धार्मिकता का फर्ज अदा करते हुए शायद ही उतनी महिमा पहुँचा पाता होगा!

एक गरीब अनपढ़ चालक भी, अपनी घोड़ा-गाड़ी चलाते समय यीशु के नाम को महिमा ला सकता है। अपने परमेश्वर की स्तुति करते या सड़क पर सह कर्मचारियों से बात करते हुए भी वह परमेश्वर को उतनी ही महिमा दे सकता है। जैसे कि यीशु के शिष्य यूहन्ना और याकूब ने सुसमाचार का प्रचार कर की थी।

हम अपने अपने पद या व्यवसाय में रह कर ही, परमेश्वर की सेवा करते रहें, तो उनके नाम की महिमा होगी।

प्रिय पाठक, सावधान रहो कि तुम अपने व्यवसाय को छोड़कर, अपने कर्तव्य के मार्ग को त्याग ना दो। और सावधान रहो कि तुम उस में रहते हुए, अपने व्यवसाय का निरादर न करो। अपने बारे में भले ही कम सोचो, मगर अपने बुलावा के विषय को कम अहम न समझो। हर कानूनी व्यवसाय को सुसमाचार से पवित्र बना सकते है ताकि उसका अंतिम फल अच्छा हो। बाइबल को परखो; अत्यंत निम्नकोटि पेशों से जुड़े, विश्वास के निडर कारनामों को हम देख सकते है। या फिर ऐसे व्यक्तियों से जुडे, जिसका जीवन पवित्रता का सचित्र उदाहरण है।

इसलिए अपने बुलावे से असंतुष्ट ना रहों। यदि तुमको यकीन है कि परमेश्वर किसी दूसरे काम के लिए बुला रहे है तो सही है। नही तो परमेश्वर ने तुम्हारा स्तर या काम, चाहे जैसे भी निर्धारित किया हो, उसी के साथ जुड़े रहो। तुम्हारा पहला प्रयास यह होना चाहिए कि, तुम अब जहाँ हो वहाँ अपनी पूरी सामर्थ के साथ परमेश्वर को महिमा पहुँचाओ। जहाँ तुम इस समय हो, वहाँ, उनकी स्तुति से भर दो। अगर किसी और जगह में वे तुमको चाहते है तो वह जरूर तुमको दिखायेंगे। इसी शाम अपनी खिजाऊ अभिलाषाओं को एक तरफ करके शान्तिपूर्ण संतुष्टता को अपनाओ।

- सि एच स्पर्जन।

परमेश्वर हमारा रखवाला

मुझे याद है, मेरी छोटी लडकी एक मफलर को खरीदने के लिए अपनी माँ को बार बार कह रही थी। इसलिए एक दिन उसकी माँ एक मफ़लर खरीद घर लेकर आयी। सहज है कि वह उसे पहन कर बाहर जाना चाहती थी, हाँलाकि बाहर आंधी चल रही थी। वह किसी भी तरह मुझे अपने साथ बाहर ले आयी। मैं उसके साथ बाहर गया। और उससे कहा, 'एम्मा, मुझे अपना हाथ पकड़ने दो।' मगर वह तो अपना हाथ, उस नये मफ़लर मे रखना चाहती थी। इसलिए मेरा हाथ नही पकडना चाहती थी। चलते-चलते हम बर्फ से ढके स्थान पर आये। उसका नन्हा पैर फिसल गया और वह गिर पड़ी। जब मैने उसे ऊपर उठाया तो उसने कहा, 'पापा आप छोटी अंगुली पकड़ने दो।' 'नहीं बेटी, मेरा हाथ पकड़ो।' 'नहीं, नहीं, मुझे, सिर्फ आपकी छोटी अंगुली पकडनी है।' सो मैने अपनी अंगुली पकड़ कर चलने दिया। थोड़ी दूर तक वह अच्छे से चल रही थी। मगर जल्द ही हम एकऔर बर्फीले स्थान पर आये। और दुबारा वह गिर पड़ी। और इस दफा उसे जरा सी चोट भी लगी। तब उसने कहा, 'पापा, मुझे अपना हाथ दीजिए।' और मैने उसे अपना हाथ दिया। उसे उठाकर मैने उसका हाथ पकड़ा ताकि वह दुबारा ना गिरे।

इसी तरह परमेश्वर हमारा रखवाला है। वह हम से बढ़कर ज्ञानी है।

- डि एल मूडी

सत्य की परख!

'यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर; देश में बसा रह और सच्चाई में मन लगाए रह। (भजन संहिता ३७:३)'

दूसरों को दोष ना दो

पॉल राडर, अपने कॉलेज के दिनों में एक मशहूर, हट्टा-कट्टा फुटबॉल खिलाड़ी था। बाद में वे अपने उद्योग में तरक्की करके सीटी सर्वीस ऑइल कम्पनी के मुखिया बने। और वे आगे चलकर वॉल स्ट्रीट के एक प्रभावशाली व्यक्ति बने। तब उद्धार पा कर, उन्होंने परमेश्वर के बुलावे का आज्ञा पालन किया, उन्होंने पिट्सबर्ग में उप-पादरी के एक सामान्य पद को अपनाया और एक प्रचारक बन गये। संक्षेप में, परमेश्वर की सेवा करने के लिए, पॉल राडर ने जो त्याग किया वह बहुत ही प्रभावशाली था। और लोग यह कल्पना भी नही कर सकते कि उनकी जिन्दगी में किसी झूठे देवता के लिए स्थान होगा।

एक हफ्ता, कलीसिया में संदेश देने के लिए एक पुराने मिशनरी को न्योता दिया गया। पॉल ने एक नज़र उन पर डाल कर, अविश्वास से सिर हिलाया। वह आदमी कमजोर दिख रहा था। और अजीब सा, झुर्रीदार रेशम से बना भूरे रंग का सूट पहने था। जब वे बोलने के लिए उठे तो, उनका स्वर बहुत धीमा, नाजुक और मुश्किल से सुनाई पड़ रहा था। वे चीन में हो रही सेवा के बारे में बात कर रहे थे। बोलते समय वे, लगातार एक रूमाल से अपने मुँह को हलका-सा पोंछ रहे थे।

राडर अपने आप में सोच रहे थे। 'यह मिशनरी क्या, आदमी तक नही है।' सभा समाप्त होने पर समय व्यर्थ किये बिना, पॉल ने उस मिशनरी का सामना किया। उनसे पूछा, 'सर, आप इतने हिजड़े क्यों लग रहे हो?' आप, अपने आप को एक परमेश्वर का आदमी कहते हो, मगर देखो! आपका पहनावा किस तरह का है और आप किस तरह बोलते हो! मुझे नही लगता, आप एक मिशनरी हो!'

उस आदमी ने शान्त रहते हुए स्पष्ट किया, 'मै चीन में पच्चीस साल रहा था। वहाँ से निकलने के समय तक, मेरे सारे पश्चिमी पोशाक पुराने हो चुके थे। मेरे गाँव के लोगों ने, मेरे लिए एक सूट, शर्ट और टाई को सिलाने के लिए इकट्ठे हुए। वे रेशमी कपड़ा खरीदने में ही समर्थ थे। उनके पास सिलाई मशीन नही थी, इसलिए उन्होंने हाथ से ही सिलाई की। अगर यह सूट बुरा लगे तो मुझे क्षमा करना।'

उस मिशनरी ने रूमाल निकाल कर अपने मूँह को पोंछा। राडर का तेवर उसके मन की विरुचि को छिपा नही पाया।

मिशनरी ने आगे कहा, 'जहाँ तक मेरी आवाज की बात है ... मैं चीन में विस्तृत रूप से सड़कों पर ही प्रचार करता था। कई बार मुझे उस के लिए मार खानी पड़ती थी। एक बार एक गिरोह ने क्रूरता से मुझ पर हमला किया। एक आदमी, मेरी गर्दन पर कूद पड़ा। मेरा कंठ तो स्थायी रूप से बिगड़ गया। और मेरे लार-ग्रन्थि नियंत्रण खो बैठी।'

मृत्युंजय ख्रिस्त

राडर का गला भर आया। अपने उतावलेपन पर बहुत शर्मिन्दगी मेहसूस करते हुए राडर क्षमा माँग कर, वहाँ से जल्दी निकल पड़ा। चर्च के तहखाने में उतरा। वहाँ कोयला का एक ढेर था, उसमें मुँह के बल गिर पड़ा। अपनी मूर्खता, और गलत निर्णयों के लिए, परमेश्वर से रो-रो कर माँफी माँगी। परमेश्वर की सेवा के लिए अपने आपको दुबारा सम्पूर्ण रूप से समर्पित किया, जैसे कि उस भाई ने किया था।

उस दिन से लेकर, पॉल राडर, एक मिशनरी विचारों वाला आदमी बन गया। और कई हजारों युवक और युवतियों को विदेशों में सेवा करने, अपने आप को समर्पित करने के लिए, वे बहुत उत्सुकता से प्रेरणा देते रहें।

- चुनीहुई।

अपनी चिन्ता छोड़ो

संयुक्त राष्ट्र के एक विशाल नगर में, मैं एक हस्पताल में थी। वहाँ मेरी एक सहेली यान बीमार थी। पता होते हुए भी उसने अपने दर्द के बारे में, मुझसे कुछ भी नही कहा, सिवाय अपनी उस बड़ी चिन्ता के बारे में, 'मान लो कि मैं मर जाऊँ, तब कौन, मेरे परिवार की देखभाल करेगा?' मैं ने उसका हाथ अपने हाथों में लिया और प्रार्थना की। तब मुझे अचानक एक कविता की याद आयी।

गायक पक्षी रॉबिन कहती :
कहा इक बार गौरय्या से
ये मनुष्य सारे इतने बेचैन क्यों

सचमुच इच्छा है कि यह जानू
घबराये इधर-उधर भागे क्यों।
गौरय्या का था यह उत्तर:
दोस्त मेरा यह है अनुमान,
जैसे तेरा और मेरा करता निरन्तर
उनका नही होगा कोई, परम पिता महान।

स्वर्गीय पिता की नज़र में क्या तुम्हारा मूल्य उनसे बढ़कर नहीं? तुम में से कौन है जो चिन्ता करके अपना कद एक इन्च बढ़ा सकता है? वस्त्रों के लिए तुम क्यों चिन्ता करते हो? वन के फूलों को देखो कि वे कैसे बढ़ते है। वे न तो परिश्रम करते हैं और न कातते हैं, फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलैमान भी, अपने सारे वैभव में उनमें से एक के समान भी वस्त्र पहिने हुए नहीं था। इसलिए यदि परमेश्वर वन की घास को जो आज है और कल भट्ठी में झोंक दी जाएगी, इस प्रकार सजाता है, तो हे अल्प-विश्वासियों, वह तुम्हारे लिए क्यों न इस से अधिक करेगा? इसलिए कल की चिन्ता न करो, क्यों कि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा। आज के लिए आज ही का दुख बहुत है।

मैं आसानी से समझ पायी कि उसकी चिन्ता का कारण अपने पति और बच्चों के भविष्य को लेकर है। मगर हमारा समय, परमेश्वर के हाथों में है। और वे उसके परिवार से उस से भी अधिक प्यार करते है। चिन्ता करने का मतलब है कि कल का बोझ, आज ही उठायें। आज की ताकत से, दो दिनों का बोझ उठाने का प्रयास करना है। समय से भी आगे चलकर, कल में प्रवेश करने के बराबर है। चिन्ता करने से कल की चिन्तायें लुप्त नही हो जातीं - मगर आज की ताकत ज़रूर लुप्त हो जाती है।

'यान, क्या तुम जानती हो, मैं नही समझती कि चिन्ता परमेश्वर से आती है। चिन्ता हमारे बैरी की ओर से है। इस धरती पर एक आदमी था जिस से शैतान डरता है। जिसको वह छू भी नही सकता और सामना भी नही कर सकता - यीशु मसीह। इसलिए उनके पास मदद के लिए जा सकते है। भले ही तुम चिन्ता पर विजय नही पा सको मगर यीशु मसीह जरूर जीत लेंगे। पवित्रात्मा के जरिये वे जीतेंगे भी। जब तुम देखते हो कि चिन्ता करना, एक पाप है - वास्तव में वह पाप ही है, क्यों कि बाइबल कहता है कि हम चिन्ता न करें - तब हम जानते है कि पाप के साथ क्या किया जाना चाहिए, क्या हम नही जानते?

'हाँ, हम उसे प्रभु के पास ले जाते है, कबूल करते है और यीशु का लहू हमें हर पाप से शुद्ध कर देता है।'

'यह सच है। इसलिए चिन्ता करने के लिए माफ़ी माँगे और तब यीशु से कहे कि उस चिन्ता को हम से दूर रखे। हर हालत में वह हमे शान्ति देंगे। मेरे पास एक छड़ी है जो अपने आप खड़ी नही रह सकती। मगर मैं उसे अपनी उंगली पर खडा कर सकती हूँ, अगर मैं उसे पकड़ू तो। इसी तरह हम अपने आप चिन्ता को दूर नही रख सकते। मगर घायल यीशु के हाथों में सौंप दे तो, वह हमे गिरने से थामे रखेंगे। एक दिन वे हमें निर्दोष प्रस्तुत करेंगे और हमें अवर्णनीय आनन्द भी देंगे। यह उस दिन की बात है जब वे प्रकट होंगे। यीशु हमारी सारे चिन्तओं से बढ़कर शाक्तिशाली हैं।'

मैंने यान के साथ मिलकर प्रार्थना की। तब उसने कहा, 'सोचने के लिए तो बहुत कुछ है। मगर मैं एक बात जानती हूँ - मैं असमर्थ हूँ। मगर यीशु नहीं। वे उस काम को करेंगे।'

'अपना बोझ यहोवा पर डाल दे और वही तुझे सम्भालेगा, वह धर्मी को कभी टलने न देगा।' (भजन संहिता ५५:२२)

- कोरी टेन बूम।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।